केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में हरियाणा के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के स्टाफ के लिये जलगुणवत्ता विषय पर दो दिवसीय क्षमता विकास प्रशिक्षण का आयोजन

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में 12–13 नवम्बर 2009 को हरियाणा के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग (Public Health Engineering Deptt) के रसायन शास्त्रीयों (Chemists) एवं प्रयोगशाला सहायकों (Lab Staff) के लिये, हरियाणा में जल गुणवत्ता संबधित मुद्दों तथा पीने वाले जल परीक्षण के मानक निर्धारण हेतु 2 दिवसीय क्षमता विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में हरियाणा के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की जिला स्तरीय प्रयोगशालाओं में कार्यरत लगभग 20 रसायन शास्त्री एवं प्रयोगशाला सहायक भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर अन्य विशिष्ठ अतिथियों के अलावा करनाल डिवीजन के SE श्री रणधीर सिंह व इंजिनियर श्री अमित कुमार उपस्थित रहे।

इस दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समन्वयक तथा, संस्थान की रैफरल लैब के मुख्य अनुवेषक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. खजांची लाल ने कार्यशाला के उद्देश्य एवं आगामी दो दिनों के कार्यक्रमों के बारे में बताया कि उपरोक्त विभागों की प्रयोगशालाओं में पानी की गुणवत्ता पर ध्यान देते हुये पीने के पानी के दुष्प्रभाव रोकने हेतु चर्चा की जायेगी तथा प्रयोगशाला में पानी की जांच कैसे की जाये प्रैक्टिकल रुप से संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा बताया जायेगा। प्रशिक्षण शिविर के दौरान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. नेपाल सिंह यदुवंशी, प्रधान वैज्ञानिक डा. पी.के जोशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. खजांजी लाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. डी.एस बुन्देला, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डा. महति प्रकाश, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री भारत भूषण, डा0 एस.के वर्मा तथा डा0 आर के चर्तुवेदी, प्रदुषण नियंत्रण बोर्ड उतराखंड द्वारा जलगुणवत्ता से सम्बधिंत मुद्दों जैसे पीने के पानी में फलोराइड, नाइट्रेट, सोडियम, पोटेशियम, कैल्शियम, मैगनिशियम की उचित मात्रा, मल–जल में पाये जाने वाले नुकसानदायक तत्वों एवं दूषित पानी पीने से जनस्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों पर चर्चा करते हुये पानी की गुणवत्ता पर माइक्रोबायोलोजिकल एवं कैमिकल व्याख्यान के साथ–साथ पानी की प्रयोगशाला में जांच करके बताई जायेगी।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन आज दिनांक 12 नवम्बर 2009 में संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह द्वारा किया गया। निदेशक ने सभी प्रतिभागियों, आगुन्तकों आदि का स्वागत किया तथा श्री रणधीर सिंह SE का इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के करवाने में विशेष धन्यवाद किया। उन्होने अपने उद्घाटन अभिभाषण में कहा कि बढती हुई आबादी व औद्योगिकरण के कारण, पीने के पानी के दुष्प्रभाव सामने आ रहे हैं। हमें इस समस्या से निपटने के लिये सचेत रहना होगा तथा पीने के पानी की सही व नियमित जांच कराते रहना चाहिए। हरियाणा सरकार द्वारा पीने के पानी की सुव्यवस्था के लिए PWD में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की स्थापना की हुई है जो पूरे हरियाणा में पानी मुहिया कराती है। वैसे तो प्रत्येक जिले में इस विभाग की प्रयोगशाला होती है परन्तु जब पानी के नमुने अधिक दूषित होते हैं। उनके जांच करने व परामर्श लेने के लिये हरियाणा सरकार ने केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल को Referral Institute बनाया हुआ है यह परियोजना पिछले लगभग दो वर्षों से लागू हुई थी। जिसके अन्तर्गत इस संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हरियाणा के सभी जिलों की प्रयोगशालाओं का दौरा करके प्रयोगशालाओं में उपलब्ध सुविधाओं का आंकलन किया गया था। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने दुषित पानी से होने वाले दुष्प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा सभी हरियाणा वासियों के लिये अच्छा पानी मिलने पर जोर दिया। निदेशक ने Public Health Engneering Deptt की प्रयोगशालाओं को आधुनिक बनाने की सलाह दी तथा प्रयोगशालाओं में पानी जांच करने वाले सभी तकनीकी स्टाफ को अच्छी ट्रेनिंग दिलवाने पर जोर दिया ताकि पीने के पानी की सही जांच हो एवं नियमित रुप से होती रहें जिससे पानी से होने वाली भयंकर बीमारियों जैसे पीलिया, हेपेटाइटिस, फलोरोसिस, नाईट्रेट दूष्प्रभाव (Blue Baby बीमारी) एवं मलमूत्र में होने

वाले इन्फेक्सन आदि जैसे दुष्प्रभावों से बचा जा सके। निदेशक ने व्याख्यान की बजाय प्रैक्टिकल कराने पर अधिक बल दिया तथा आग्रह किया कि पानी से संबधित समस्या को वैज्ञानिकों के सामने रखें ताकि निदान किया जा सके।

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के SE श्री रणधीर सिंह द्वारा सभी जिलों की प्रयोगशालाओं में अच्छी सुविधायें देने के लिये संस्थान द्वारा सुझाव मांगे गये जिससे गांव व शहरों में अच्छी से अच्छी गुणवत्ता वाला पानी दिया जा सके। श्री रणधीर सिंह ने प्रशिक्षण के आयोजन पर संस्थान का विशेष धन्यवाद किया।

अन्त में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. डी.एस बुन्देला ने सभी का धन्यवाद प्रस्तुत किया।